

উৎস: নজরুল-সঙ্গীত স্বরলিপি, সপ্তম খণ্ড (দ্বিতীয় মুদ্রণ, ফাল্গুন ১৪০৩)। নজরুল ইন্সটিটিউট
স্বরলিপিকার: সুধীন দাশ

চিরদিন কাহারও সমান নাহি যায়
আজিকে যে রাজাধিরাজ কা'ল সে ভিক্ষা চায় ।
সমান নাহি যায় ॥

অবতার শ্রীরামচন্দ্র যে জানকীর পতি
ভারও হলো বনবাগ রাবণ করে দুর্গতি ।
আগুনেও পুড়িল না ললাটের লেখা হায় ।
সমান নাহি যায় ॥

স্বামী পঞ্চ পাণ্ডব, গর্বা কৃষ্ণ ভগবান
দুঃশাসন করে তবু শ্রৌপদীর অপমান
পুত্র তার হলো হত যদুপতি যার সহায়
সমান নাহি যায় ॥

মহারাজ হরিশ্চন্দ্র, রাজ্য দান ক'রে শেষ
শশান-রক্ষী হয়ে লভিল চণ্ডাল-বেশ
বিকু-বুকে চরণ-চিহ্ন, ললাট-লেখা কে খণ্ডার
সমান নাহি যায় ॥

H.M.V. P 11753 । শিল্পী : মিদ আনসুরঝা । ভক্তিবিশ্বক । তাল : কাহারবা ।

I -১ -১ { সুরমা ধপা । পর্বা -১: -১প: -১১ I
০ ০ চি০ র০ দি ০ ০০ ন্

II পর্বা ধপা পর্বা: প: | গবগরা -সাঁ: বগ: বগা I বসা -১ } -১ -১ | -১ ধর্বা: "র্গ: ঋ I
কা০ হা০০ রো০ স যা০০০ ন্ যা০ হি০ যা০ য্ ০ ০ ০ আজি কে বে

I নর্বা নর্বা ধপা পর্বা | -১ -১ "র্বা বর্গবর্গা: সর্গ: I নর্বা নর্বা ধপা ধপা | পর্বা -গর্বা পর্বা ধপা I
রা০ জা০ ধি০ রাজ্ ০০ আজি ০০০কে বে রা০ জা০ ধি০ রাজ্ কাণ্ ০০সে ভি০ কা০

I पथा -ा -ा -पथा | -पथा र्गी र्गर्गर्गी र्गी I नर्गी नथा थपा थपा | पथा -पथा पथा वपा I
 चा० ० ० ०० ००र् आदि ०००के वे वा० आ० वि० वाच् कान् ००ले डि० का०

I वपथना -र्गी -थपथाः पः | गी -गर्गसाः रगः रगी I रसा -ा र्गसा वपा | र्था -ा -वपा -वा II
 चा००० ० ००र् स वा ००न् ना० हि० या० र् चि० र० दि ० ०० न्

II -ा -ा -ा -ा | {-ा पथना पथा पा I र्था -र्गी र्गी र्गी^{र्} | -ा पथाः र्गः र्गी I
 ० ० ० ० ० अब०० तार् श्री वा न् चन् द्र ० ये० वा न

I र्गर्गी -र्गर्गी -ा र्गर्गी | -ा र्गर्गी र्गर्गी -र्गी I र्गर्गी र्गर्गर्गी -र्गर्गी र्गी | -ा नना र्गर्गी वा I
 की० ००० र् पति ० तारो हलो ० व न००० ०० वा न् वाव ०र्क रे

I पथा -नर्गी नर्गीना थपा } | {-ा र्गर्गीः र्गः र्गी I नर्गी नथा थपा थपा | पथा थपा पथा वपा I
 दू० ००र् प०० डि० ० आ०० ले ० पु० डि० ल० ना० ल० ला० टे० र०

[पथा पथा]
 हा० र् स

I रसा वपा (पथाः -पः) | गवर्गसा -साः रगः रगी I रसा -ा र्गसा वपा | र्था -ा -वपा -वा II
 ले० था० ह० र् ना००० न् ना० हि० या० र् चि० र० दि ० ०० न्

II -ा -ा -ा -ा | {-ा सना रसन्था र्गी I सा -वा -ा वपा | -ा वपथा पवगा वा I
 ० ० ० ० ० था००० ००पन् च पा ० न् ज्व ० सथा० ०र्कृ ग

I पथा र्गर्गी र्गी -ा | -ा वा वा वा I था थपा थपपा पथा | -ा वा र्गर्गी -वा I
 ड० ग०० वा न् ० दूः शा सन् क रे० ००त दू० ० र्गी पदी०० ०र्

I -ा र्गर्गी वा वा } | {-ा र्गीः र्गः र्गी I नर्गी नथा र्गर्गी थपा | पथा थपा पथा वपा I
 ० अ प वान् ० पू द्र तार् ह० लो० ह०० त० य० दू० प० डि०

[पमः]
रुत्

I रुवा -ःपः पधाः (-पः)) | गवगवा -साः रगः रगा I रुवा -ा रुवा मपा | पधा -ा -मपाः -मः II
वा० रुत् हा० रुत् वा००० न् ना० हि० वा० रुत् चि० र० दि० ० ०० न्

II -ा -ा -ा -ा | {-ा पधा -मपा -पा I वा धर्वा र्वा र्धा | -ा पधाः र्वाः र्वा I
० ० ० ० ० महा० ०वा० रुत् ह रिष् च छ० ० रा ज्य दान्

I र्वा र्वा र्वा र्वा -ा | -ा र्वाः -र्वाः गा I र्वा -र्वा -र्वा र्वा र्वा | -ा ननर्वा -नधा पा I
क'० रे०० शे० रुत् ० मधा न् र र्वा० ०० ००ह' रे ० लडि० ०ल चन्

[र्वा र्वा र्वा र्वा र्वा]
विष् नु००वु के

[धपा]

I पधा -नर्वा ननधा -मपा) | {-ा (र्वाः र्वा र्वा) I नर्वा नधा र्वा (पधा) | पधा पधा पधा र्वा I
डा० ०वु वे००० ००न् ० विष् नु वु के च० र्वा चिन् ह० ल० लाट् ले० वा०

I रुवा मपा पधा -ःपमः | गवगवा -साः रगः रगा I रुवा -ा रुवा रुवा | पधा -ा -मपा -वा IIII
वे० र्वा डा० रुत् वा००० न् ना० हि० वा० रुत् चि० र० दि० ० ०० न्